Assignment

Name :- Rupam Gautam

Roll no :- SKT/19/01.

paper name :- Acting and Script Writing.

paper Code :- 12133901

year :- 2nd year (3rd Sem)

Scanned by TapScanner

Assignment

1.) आहार्य अभिनय के कितने प्रकार स्वीकृत किए गए है? संक्षिप्त वर्णन करें।

→ आहार्य अभिनय में चार प्रकार के नेपथ्यविधान स्वीकृत हैं

क) पुस्त
ख) अलंकार
ग) अंगरचना
घ) संजीव

पुस्त

रंगमंच पर सांकेतिक पदार्थों की योजना के लिए पुस्तविधि का प्रयोग किया जाता है इसमें सांकेतिक प्रतिकृति (मॉडल) बना कर रंगमंच पर रथ, विमान, पर्वत, वृक्ष, नदी, कवच, ध्वज, गज, अश्व, मृग आदि पदार्थों और जीवों का सादृश्य निर्माण किया जाता है इससे सज्जा प्रभावी हो जाती है और अभिनेय वस्तु के लिए उपयुक्त देश काल एवं वातावरण के निर्माण में सहायता मिलती है प्रतिकृति के निर्माण में लकड़ी, कपड़े, दफ्ती, चर्म, लाख, बाँस, खपच्ची आदि सामग्रियों का उपयोग भी होता है आधुनिक रंगमंचों पर विद्युतप्रभाव, प्लाईवुड तथा थर्मोकोल आदि की सहायता से आहार्यविधि

Scanned by TapScanner

भव्यता और प्रभावी ढंग से सफलतापूर्वक प्रस्तुत की जा रही है।

→ पुस्तविधि तीन प्रकार है —

क) सन्धिम ख) व्याप्तिम ग) वेष्टिम

सन्धिम पुस्तविधि

सन्धिम का अभिप्राय है दो वस्तुओं के सन्धन अर्थात् जोड़ कर या बाँध कर बनाई गई सामग्री। बाँस, पटाई, कपड़े, आदि को जोड़कर या बाँधकर पत्थर, शिला, प्रसाद, दुर्ग, वाहन, विमान रथ आदि को सन्धिम पुस्त के माध्यम से रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाता है।

व्याप्तिम पुस्तविधि

क्षेप क्रियां से सम्पन्न विधि व्याप्तिम कहलाती है। क्षेप का अर्थ है — क्षेपण, धक्का देना, फेंकना आदि। व्याप्तिम में व्याज का अर्थ है — धागे आदि को खींचना स्वाभाविक गति न होने पर धागे, डोरी, या यान्त्रिक साधक द्वारा प्रकारान्तर से कृत्रिम गति प्रदर्शित करना।

Scanned by TapScanner

वेष्टिम पुस्तविधि

वेष्टिम का सम्बन्ध वेष्टन क्रिया से है। वेष्टन का अर्थ है — लपेटना। वेष्टन विधि से उपस्थित की गई आहार्य सामग्री वेष्टिम पुस्त के अन्तर्गत समाविष्ट है। अभिनय के उपयोग में आने वाली कोई आकृति या ढाँचे को भूसे, घास, खपच्चियों की सहायता से बनाकर उसे सम्यक आकार प्रदान करने के लिए ऊपर से लाख, वस्त्र तथा कागज आदि की सहायता से लपेटकर ढक दिया जाता है।

2.) ## अलंकार

नाट्य में पात्र और नाटकीय वातावरण को प्रभावी बनाने के लिए आवश्यकतानुरूप साज-सज्जा, वस्त्रधारण आदि का विधान किया जाता है। नाट्य शास्त्र में विभिन्न प्रदेशों के निवासियों, वर्गों व जातियों के अनुरूप अनेक परिधानों, आभूषणों का उल्लेख किया जाता है। आहार्य सामग्री अभिनेता द्वारा उसी सीमा तक धारण करना उचित है जिससे अभिनय स्वाभाविक लगे। अत्यधिक आभरण, प्रसाधन, भारीभरकम और शरीर को बोझिल बनाने वाले साधन नाटक के प्रयोग में व्यवधान उत्पन्न करते हैं।

Scanned by TapScanner

अलंकार विधि में शरीरिक अंगों और उपांगों में धारण किये जाने योग्य विधि प्रकार के आभूषण, वस्त्र तथा केशविन्यास आदि की योजना की जाती है।

→ सामान्यतः अलंकार तीन प्रकार के होते हैं ——

क) पुष्पमाल्य
ख) आभरण
ग) वस्त्र

पुष्पमाल्य

माला ग्रीवा में धारण किये जाने वाला अलंकरण है। यह वेष्टित, वितत, सांघात्य, ग्रथित और प्रलम्बित विधि से पहने जाने योग्य है।

आभरण

आभूषणों द्वारा शरीर के अलंकार की निम्नलिखित विधियाँ हैं।

- आवेध्य — अंगों को छेदकर धारण करने वाले आभूषण। जैसे:- नासाफूल
- आरोप्य — अंगों पर जिनका आरोपण मात्र किया जाये। जैसे — मुद्रिका।
- बन्ध्यनीय — सूत आदि की सहायता से जिन्हें

Scanned by TapScanner

शरीर पर बाँधा जाए। जैसे – बाजुबन्द।

- प्रक्षेप्य — जिन्हें केवल अंगों के ऊपर रख लिया जाता है, जैसे :- मुकुट।

वस्त्रविधि

- वेष – वेष तीन प्रकार का है – शुद्ध, विचित्र और मलिन।

- शुद्ध — देव-यात्रा, नियमानुष्ठानपूर्वक किये जाने वाले मांगलिक कार्य, तिथि, नक्षत्र योग में सम्पन्न ज्योतिषीय अनुष्ठान, विवाह, स्त्रियों और पुरुषों द्वारा किये जाने वाले धार्मिक कार्य, प्रसापूर्वक विनीत मनुष्यों का वेश शुद्ध होना चाहिए।

- विचित्र :- देव, दानव, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व, सर्प, राजा और कर्कश प्रकृति के पुरुषों का वेष विचित्र रखा जाता है।

- मलिन – उन्मत, प्रमत्त पथिक विपत्तियों से घिरे हुए मनुष्यों का वेष मलिन होता है। मुनि, निर्ग्रन्थ, शाक्य, यति, पशुपत आदि के मलिन वेष में रक्त वस्त्र धारण का विधान है। तापसों के वेष में चीर, वल्कल और चर्म की योजना की जाती है।

Scanned by TapScanner

3.) ## अंगरचना

यह आहार्य अभिनय का तीसरा अंग है इसके द्वारा आकृति रूप एवं रंग आदि में परिवर्तन प्रदर्शित किया जाता है जैसे- यक्ष, देव, किन्नर, दानव आदि के रूपों का प्रदर्शन। भरत ने भौगोलिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर भिन्न-भिन्न स्थान और जातियों के निवासियों के लिए तदनुरूप रंगों की योजना का विधान किया है। अंगरचना में वर्णों का संयोजन पात्रों की मनोदशा के अनुसार के किया जाना चाहिये। भरत ने अंगरचना के लिए नाना प्रकार के वर्णों और उपवर्णों की चर्चा की है उनके अनुसार मूल वर्ण चार प्रकार के हैं— सित (सफेद) नील (नीला), पीत (पीला) और रक्त (लाल)।

संजीव

आहार्य ~~आभि~~ अभिनय में यह चौथा अंग है इसमें अपद (बिना पैर वाले) द्विपद (दो पैर वाले) चतुष्पद (चार पैरों वाले) जीव जन्तुओं को रंगमंच पर उतारने की विधि का निर्देश किया गया है सर्प अपद जीव है, पक्षी द्विपद हैं तथा ग्राम्य (कुत्ता, बिल्ली, घोड़ा आदि) और आरण्यक हाथी, सिंह, व्याघ्र आदि चतुष्पद है।
इस प्रकार अनुकीर्तन रूप नाट्य में ग्रहण की जाने वाली उपकरणात्मक सामग्री अनुकृति और सादृश्य परक होनी चाहिए।

Harsha Kumari

Scanned by TapScanner